

रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

7,

लखनऊ एवं एटा से प्रकाशित,

गुरुवार, 20 अप्रैल, 2023

पृष्ठ: 8

कपास बहु उपयोगी के साथ नकदी फसल- डॉक्टर जगदीश कुमार



(रहस्य संदेश)

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है। कपास के रेशे से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है। तथा उन्होंने बताया कि कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है। उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलो से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है। डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018–19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। डॉक्टर जगदीश ने बताया की वर्तमान

में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास – गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08, एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि

इसकी बुवाई कतारों से कतार 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे 30 सेंटीमीटर पर करते हैं। उन्होंने कपास उत्पादक किसान भाइयों को सलाह दी कि उर्वरक प्रयोग हेतु किसान भाई 120 किलो यूरिया तथा 65 किलोग्राम डीएपी का प्रयोग करें। डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा धने पौधों का विरलीकरण कर दें। उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे में बताया की गूलर भेदक की रोकथाम के लिए विवालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाढू झुलसा एवं अन्य परडी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेढ़ किलोग्राम ब्लाईटॉक्स 50: डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें।

(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नज़र)

दिग्गज

जस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात, संघ प्रदेश एवं बुंदेलखण्ड से एक साथ प्रसारित

गुरुवार, 20 अप्रैल, 2023

कुल पेज : 08

मूल्य प्रति 2/- रुपया

कपास बहु उपयोगी के साथ नगदी फसल.. डॉक्टर जगदीश कुमार

दि ग्राम दुडे, कानपुर।

(बरखा भारद्वाज)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर विजेंद्र सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है। कपास के रेशों से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है। तथा उन्होंने बताया कि कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है। उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलों से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है।

डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018-19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। डॉक्टर जगदीश ने बताया की वर्तमान में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य



वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास -गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर

औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08, एचडी

123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि इसकी बुवाई कतारों से कतार 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे 30 सेंटीमीटर पर करते हैं। उन्होंने कपास उत्पादक किसान भाइयों को सलाह दी कि उर्वरक प्रयोग हेतु

किसान भाई 120 किलो यूरिया तथा 65 किलोग्राम डीएपी का प्रयोग करें। डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा धने पौधों का विरलीकरण कर दें। उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे में बताया की गूलर भेदक की रोकथाम के लिए किनालफास 25 इंसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाढ़ झुलसा एवं अन्य परदी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेफ़ किलोग्राम ब्लाईटॉक्स 50 त डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें।

कपास बहु उपयोगी के साथ नकदी फसल : डॉक्टर जगदीश कुमार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर विजेंद्र सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है। कपास के रेशे से कंबल, दरियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है। तथा उन्होंने बताया कि कपास के रेशों से सूती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है। उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलों से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है। डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018-19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। डॉक्टर जगदीश ने बताया की वर्तमान में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य बढ़ि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास - गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियां हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का



सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08, एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि इसकी बुवाई कतारों से कतार 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे 30 सेंटीमीटर पर करते हैं। उन्होंने कपास उत्पादक किसान भाइयों को सलाह दी कि उर्वरक प्रयोग हेतु किसान भाई 120 किलो यूरिया

तथा 65 किलोग्राम डीएपी का प्रयोग करें। डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई खुरपी की सहयता से खरपतवार निकालने तथा घने पौधों का विरलीकरण कर दें। उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्याप्त जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे

में बताया की गूलर भेदक की रोकथाम के लिए किनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाढ़ झुलसा एवं अन्य पर्डी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेह किलोग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें।

दैनिक

सिटी एवेन्यू

NEWS

कानपुर से प्रकाशित



कानपुर, गुरुवार

19.04.2023

વર્ષ: 09 | અંક: 20

પૃષ્ઠ: 08, મૂલ્ય: ₹ 02

કપાસ બહુ ઉપયોગી કે સાથ નકદી ફસલ: ડૉ. જગદીશ

સીએ ન્યૂज

કાનપુર: સીએસે કે કુલપતિ ડૉક્ટર બિજેંડ્ર સિંહ દ્વારા જારી નિર્દેશ કે ક્રમ મેં કપાસ અનુભાગ કે પ્રભારી અધિકારી ડૉક્ટર જગદીશ કુમાર ને બતાયા કે કપાસ નકદી ફસલ હૈ। કપાસ કે રેશે સે કંબલ, દરિયાં, ફર્શ આદિ કે નિર્માણ મેં ઉપયોગ કિયા જાતા હૈ। તથા ઉન્હોને બતાયા કે કપાસ કે રેશોં સે સૂતી વસ્ત્ર, મેડિકલ કાર્ય હેતુ પ્રયોગ તથા હોજરી કે સામાન કા નિર્માણ કિયા જાતા હૈ। ઉન્હોને બતાયા કે કપાસ સે નિકલને વાલે બિનૌલો સે પણુંઓ કા આહાર ભી તૈયાર કિયા જાતા હૈ। ડૉક્ટર જગદીશ કુમાર ને બતાયા કે ઉત્તર પ્રદેશ મેં કપાસ કા ક્ષેત્રફલ લગભગ 9000 હેક્ટેયર હૈ પ્રદેશ મેં વર્ષ 2018-19 મેં રૂઝ કી ઉત્પાદકતા 2.5 સે 3 કુંતલ પ્રતિ હેક્ટેયર હૈ। ડૉક્ટર જગદીશ ને બતાયા કી વર્તમાન મેં જલ સ્તર કી કમી, કપાસ મૂલ્ય વૃદ્ધિ, બેહતર સુરક્ષા તકનીક એવં કપાસ -ગેહું ફસલ ચક્ર હેતુ અધિક ઉત્પાદન એવં અલ્ય અવધિ કી પ્રજાતિયોં કા વિકાસ કપાસ કી ખેતી કે લિએ અનુકૂલ પરિસ્થિતિયાં હૈ। ઉન્હોને બતાયા કે વિશ્વવિદ્યાલય મેં કિએ ગાએ પરીક્ષણોં કે અનુસાર નર્ઝ ઉત્પાદન એવં ફસલ સુરક્ષા તકનીક કો અપનાકર ઔસત ઉપજ લગભગ 15 સે 18 કુંતલ પ્રતિ હેક્ટેયર પ્રાસ કર 20 સે 25 હજાર રૂપએ પ્રતિ હેક્ટેયર શુદ્ધ લાભ પ્રાસ કિયા જા સકતા હૈ। ડૉક્ટર જગદીશ ને બતાયા કે કપાસ કી બુવાઈ કા સર્વોત્તમ સમય 15 અપ્રૈલ સે 15 મર્ઝ તક સર્વોત્તમ રહતા હૈ। ઇસકે લિએ દેસી પ્રજાતિયાં જૈસે આરજે 08, એચડી



123, એચડી 324 તથા અમેરિકન પ્રજાતિયાં જૈસે વિકાસ, આર એસ 810, આર એસ 2013, એચ એલ 1556 પ્રમુખ હૈ। ઉન્હોને બતાયા કે ઇસકી બુવાઈ કતારોં સે કતાર 70 સેટીમીટર તથા પૌથે સે પૌથે 30 સેટીમીટર પર કરતે હૈનું। ઉન્હોને કપાસ ઉત્પાદક કિસાન ભાઇયોં કો સલાહ દી કે ઉર્વરક પ્રયોગ હેતુ કિસાન ભાઈ 120 કિલો યૂરિયા તથા 65 કિલોગ્રામ ડીએપી કા પ્રયોગ કરો। ડૉ કુમાર ને બતાયા કે કપાસ કી ફસલ મેં ખરપતવાર પ્રબંધન બહુત જરૂરી હૈ ઇસકે લિએ કિસાન ભાઈ ખુરપી કી સહાયતા સે ખરપતવાર નિકાલને તથા ઘને પૌથોં કા વિરલીકરણ કર દેં। ઉન્હોને બતાયા કે વર્ષા કાલ કે સમય ખેત મેં પર્યાસ

જલ નિકાસ કી સુવિધા હો જિસસે વર્ષા કા પાની ખેત મેં ઠહરને ન પાએ। કલિયાં, ફૂલ વ ગૂલર બનતે સમય ખેત મેં પર્યાસ નમી હોની ચાહિએ। કપાસ કી ફસલ મેં કીટ પ્રબંધન કે બારે મેં બતાયા કી ગૂલર ભેદક કી રોકથામ કે લિએ ક્રિનાલફાસ 25 ઇસી 2 લીટર દવા કો 600 સે 800 લીટર પાની મેં ઘોલકર દો-તીન સસાહ કે અંતરાલ પર તીન યા ચાર બાર છિડકાવ કર દેં। ઉન્હોને બતાયા કે કપાસ કી ફસલ મેં સાકાડૂ ઝુલસા એવં અન્ય પરડી ઝુલસા બીમારી લગતી હૈ જિસ કી રોકથામ કે લિએ ડેઢ કિલોગ્રામ બ્લાઇટોક્સ 50ની ડબ્લ્યુપી કો કીટનાશક દવાઇયોં કે સાથ મિલાકર છિડકાવ કર દેં।



कपास नकदी फसल है: डॉ. कुमार

□ यूपी में 9 हजार हेक्टेअर में होती है कपास की फसल, गूलर भेदक की रोकथाम के लिए दवाओं का छिड़काव करें किसान

कानपुर, 19 अप्रैल। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कपास अनुभाग के प्रभारी अधिकारी डा. जगदीश कुमार ने बताया कि कपास नकदी फसल है। कपास के रेशे से कंबल, दारियां, फर्श आदि के निर्माण में उपयोग किया जाता है तथा उन्होंने बताया कि



खेत में लगा कपास

कपास के रेशों से सृती वस्त्र, मेडिकल कार्य हेतु प्रयोग तथा होजरी के सामान का निर्माण किया जाता है। उन्होंने बताया कि कपास से निकलने वाले बिनौलों से पशुओं का आहार भी तैयार किया जाता है।

डॉक्टर जगदीश कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कपास का क्षेत्रफल लगभग 9000 हेक्टेयर है प्रदेश में वर्ष 2018-19 में रुई की उत्पादकता 2.5 से 3 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। डॉक्टर जगदीश ने

बताया की वर्तमान में जल स्तर की कमी, कपास मूल्य वृद्धि, बेहतर सुरक्षा तकनीक एवं कपास -गेहूं फसल चक्र हेतु अधिक उत्पादन एवं अल्प अवधि की प्रजातियों का विकास कपास की खेती के लिए अनकूल परिस्थितियां हैं। उन्होंने बताया कि

विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के अनुसार नई उत्पादन एवं फसल सुरक्षा तकनीक को अपनाकर औसत उपज लगभग 15 से 18 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर 20 से 25 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है। डॉक्टर जगदीश ने बताया कि कपास की बुवाई का



डॉ. जगदीश कुमार

सर्वोत्तम समय 15 अप्रैल से 15 मई तक सर्वोत्तम रहता है। इसके लिए देसी प्रजातियां जैसे आरजे 08, एचडी 123, एचडी 324 तथा अमेरिकन प्रजातियां जैसे विकास, आर एस 810, आर एस 2013, एच एल 1556 प्रमुख हैं।

उन्होंने बताया कि इसकी बुवाई कतारों से कतार 70 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे 30 सेंटीमीटर पर करते हैं। उन्होंने कपास उत्पादक किसान भाइयों को सलाह दी कि उत्वरक प्रयोग हेतु किसान भाई 120 किलो यूरिया तथा 65 किलोग्राम डीएपी का प्रयोग करें। डॉ कुमार ने बताया कि कपास की फसल में खरपतवार प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके लिए किसान भाई

खुरपी की सहायता से खरपतवार निकालने तथा घने पौधों का विरलीकरण कर दें। उन्होंने बताया कि वर्षा काल के समय खेत में पर्यास जल निकास की सुविधा हो जिससे वर्षा का पानी खेत में ठहरने न पाए। कलियां, फूल व गूलर बनते समय खेत में पर्यास नमी होनी चाहिए। कपास की फसल में कीट प्रबंधन के बारे में बताया की गूलर भेदक की रोकथाम के लिए किनालफास 25 ईसी 2 लीटर दवा को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर दो-तीन सप्ताह के अंतराल पर तीन या चार बार छिड़काव कर दें। उन्होंने बताया कि कपास की फसल में साकाडू झुलसा एवं अन्य पर्डी झुलसा बीमारी लगती है जिस की रोकथाम के लिए डेढ़ किलोग्राम ब्लाईटॉक्स 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी को कीटनाशक दवाइयों के साथ मिलाकर छिड़काव कर दें।